निषादों के जितने भी नाम हैं,
उन सभी को एक
वृहत् शीर्ष नाम —
"निषाद"
में संकलित किया जाना
अब अनिवार्य है।
इसके लिए
देश के हर प्रांत से
निषाद भाई–बहनों को
सड़क पर उतरना होगा।
जिस दिन सड़क पर उतरेगा निषाद
समाज,
उस दिन से
निषाद एकत्रीकरण को
कोई शक्ति नहीं रोक सकेगी।
आह्वान:
जागो निषादों जागो
जागो तत्सम जागो
जागो भारत

M.K.Sahani□□□

निषाद पर्सनल लॉ की कापी प्राप्त करने के लिए निषाद समाज की सदस्यता संस्था के क्यू आर कोड पर 100/रूपये भेजकर उसके इवेंट आइडी के साथ संस्था के पते .या मोबाइल नं पर भेजिए। पीडीएफ तत्काल आपके मोबाइल पर भेज दिया जायेगा। हार्ड कापी यदि चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क भेजने पर आपके पते पर भेजा जा सकेगा।

इस पत्रक के लिए सहयोग राशि मात्र 10 रूपये ट्रस्ट में दान करें।

यूको बैंक
UCO BANK

निषाद समाज (ट्रस्ट)

कार्यालय निषाद समाज (ट्रस्ट)
22582/01, पवित्र नगर, लालकुआँ, पोस्ट पोली पाथर, ग्वारीघाट रोड, जिला जबलपुर, मध्यप्रदेश पिन कोड 482008

Phone: 9755013821
E-mail: nishad.pariwar.samaj@gmail.com

निषाद समाज (ट्रस्ट)

निषाद जागरण 3
महेश्वर साहनी

जागों निषाद नाम की हस्ती,
खूशहाल कर दो हर गाँव हर बस्ती।

Mob 7897314809

निषाद जागरण 1

वीर बनो, विद्वान बनो, यथेष्ट धनवान बनो
देश के सपूत नागरिक बनो
देश के सपूत नागरिक बनो।
धीर बनो, अप-टू-डेट बनो, संस्कारी संतान बनो
समुदाय के कट्टर संरक्षक बनो
देश के सपूत नागरिक बनो।
दूरदर्शी बनो, जासूस बनो, सुकर्मी अवतारी बनो
उपजातियों का एकत्रीकरण करो
देश के सपूत नागरिक बनो।
व्यापारी बनो, आर्थिक शक्ति बनो, भू-खंड के मालिक बनो
शरीर सौष्ठव कराओ औ' करो
देश के सपूत नागरिक बनो।
संवैधानिक बनो, रणनीतिज्ञ बनो, यथेष्ट बजट वाले बनो
नारी शक्ति संवर्धक बनो
देश के सपूत नागरिक बनो।
स्वंयसेवी बल सुनिश्चित करो, संसाधन के रक्षक बनो
समानुपातिक विकास कराओ औ' करो
देश के सपूत नागरिक बनो।

एमके साहनी

कहते हो कि देश हमारा है

हमारा नमन तुम्हे शत बार
एक देश ,एक स्वाभिमान
"सावरेन",स्वंयप्रभुसमपन्न
अंदर-बाहर से एक समान
नहीं हो किसी का अपमान
नहीं हो किसी का अपमान।
हिन्द देश में हिंदी व्याकरण
जातिवाचक संज्ञा पढ़ाता है
जितनी जातियां हिंदी में हैं
अंग्रेजी में आज तक नहीं हुई
कॉमन नाउन प्रभावकारी है
तभी तो आज भी अंग्रेजी
देश-दुनिया में प्रभावशाली है।
भारत देश में एक संविधान
वन वोट वन नेशन है, परंतु
ओबीसी के साथ अन्याय क्यों
निषाद समाज का अपमान क्यों
क्यों रहेगा मजबूर जलीय मजदूर
बंधुआ खेतिहर मजदूर ही क्यों
मनरेगा मजदूरी भी नसीब नहीं क्यों ?
क्यों निषाद सिर्फ घंटी बजातें हैं?
मनसा पूरा करने मंदिर में जातें हैं?
दान-दक्षिणा देकर बेवकूफ़ बनतें हैं?
मंदिर की सफाई,रंग-रोगन करते हैं!
खेती-बाड़ी से लेकर गौ-पालन करते हैं!
कपड़े धोते हैं, संडास -कचड़े हटातें हैं!
मठाधीश पीठाधीश फिर भी फॉर्वर्ड होतें हैं!
समाज में समाजिक अन्याय क्यों?
ओबीसी महिलाओं का अपमान क्यों?
ओबीसी युवाओं को जिंदा जलाना क्यों?
ओबीसी को ज्ञानार्जन से भटकाना क्यों?
ओबीसी -रिजर्वेशन कोटा का बंदरबांट क्यों?
ओबीसी को सहस्र जातियों में विभाजन क्यों?
मूलवासियों को मूलाधार से वंचना क्यों??
स्वतंत्रता के उन्नासिवें वर्ष में भी पराधिनता क्यों?
आत्म- मंथन करने के लिए ओबीसी ही क्यों?
कर्म-फल भुगतने के लिए ओबीसी ही क्यों ?
कांवर ढ़ोने के लिए ओबीसी ही क्यों?
जेल भरो आसान ; न्याय पाने के लिए देरी क्यों?
ओबीसी की परंपरागत पेशा में घुसपैठ क्यों?
ओबीसी को इंसाफ चाहिए,इंसाफ चाहिए।

एमके साहनी

एक भाव, एक इतिहास, एक संघर्ष

निषाद
भावना से परिपूर्ण है,
दान देने में निपुण है।
तीनों लोकों को दान देने वाला निषाद,
जल, जंगल और ज़मीन देने वाला निषाद,
अधिकार छोड़ देने वाला—
पर आत्मसम्मान कभी न छोड़ने वाला निषाद।
कृषि करने पर हलिका निषाद,
जल से संबंध होने पर जलिका निषाद।
बिहार में—
नाविक, मछुआ, मल्लाह, धीवर,
केवट, गोंड, बिंद, गोढ़ी, बनपर,
सुरैया, मुरियारी, तीयर, सेवतिया।
झारखंड में—
नागवंशी।
उत्तर प्रदेश में—
तुरहा, कहार आदि निषाद समाज।
मध्य प्रदेश में—
माझी, मांझी, भोय।
महाराष्ट्र में—
आगरी, बागड़ी, कोली, सागरी, भोई
मछुआरा, मासेमार।
उड़ीसा में—
केउटा।
पश्चिम बंगाल में—
जालिया, कैवर्त।
केरल में—
मुक्कुवा, आर्यन, वेलन, मरक्कन।
कर्नाटक में—
नविगा, केवत, मात्स्यिकी।
भाषा बदली, क्षेत्र बदला,
नाम बदले—
पर पहचान एक ही रही : निषाद
निषाद कोई कमजोर जाति नहीं,
निषाद एक मार्शल कौम है।
निषाद योद्धा रहे हैं,
इनके पूर्वज राजा–महाराजा थे।
ऋषि, संत, महात्मा और विद्वान
निषाद परंपरा की धरोहर हैं।
एकता का संकल्प